#२. विकसित चेतना की आवश्यकता -२

दिनांक २२/०९/२०११ अमरकंटक

आज दिनांक २२/१/२०११ के दिन के चिंतन में विकसित चेतना के आधार पर यह सोच विचार स्पष्ट हुआ कि मानव सुविधा संग्रह के लिए युद्ध और संघर्ष की कुछ अनदेखियोंके फलस्वरूप धरती असंतुलित होना शुरू कर दिया | धरती तापग्रस्त हो गई,प्रदूषण छा गया,मानव परम्परा में अपराध प्रवृत्ति बढते गया | लक्ष्य केवल सुविधा संग्रह शेष रह गया | यह भौतिकवाद का अध्ययन हुआ |

इसके पहले आदर्शवाद के अनुसार जंगल के ऊपर मानव अनाधिकार विधि से शोषण किया | जिसमें से अपराध रूप में प्रधान वस्तु नाभिकीय वस्तु का उपयोग, दूसरा खनिज तेल, तीसरा खनिज कोयला- यही तीन वस्तु प्रधान है जिससे धरती बीमार हुई प्रदूषण छा गया,यह अनाधिकार विधि से शोषण हुआ |

मध्यस्थ दर्शनसह-अस्तित्ववाद के अनुसार स्रोत को बनाये रखते हुए प्रौद्योगिकी को कार्य रूप में बनाना बताया गया है | ऐसे सार्थकता की स्थिति में सर्व मानव को एक समान समझना,स्वीकारना, व्यवहार करना बनता है,फलस्वरूप उत्सव होता है | ऐसे उत्सव कार्यक्रमों के साथ मानव जीना चाहता है | इसे सार्थक बनाने के लिए सिद्धांत रूप में अथवा मूल रूप में “मानव जाति एक”, “मानव धर्म एक” से पारंगत होना आवश्यक है | इससे असंतुलन से संतुलन होना बनता है |

मानव मूल रूप में सुरक्षित रहना चाहता है | इसका इतिहास जंगल युग में पशुओं से जूझना,मानव का मानव के साथ नस्ल एवं रंग के साथ जूझना वर्णित है | इसी क्रम में अर्थात जंगल युग से जीवों के साथ जूझने के क्रम में वध, विध्वंस के लिए हथियारों का निर्माण हुआ तथा जीव संसार के ऊपर प्रयोग किया जिससे जीव संसार नियंत्रित जैसा हो गया | इसी क्रम में मानव सामरिकता में वध विध्वंस को जोड़ने लगा | यद्यपि धातु युग से ही मानव का मानव से सामरिक युद्ध शुरू हुआ | यह तलवार से शुरू हुआ, बन्दूक से होकर मिसाइल में पहुँच चुका है | इनके लिए जितना भी विस्फोटक है उस पर काबू पाने और लोगों को काबू न कर पाने में संघर्ष जारी है | इन सब बातों का परिशीलन करने पर निष्कर्ष निकलता है कि सभी के मूल में मानव ही है | इन सब से निकलने के लिए चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव है | इसमें मानवत्व के साथ जीने का प्रावधान है | यह अध्ययन गम्य हुआ है और सर्वाधिक लोगों में स्वीकार होता है | इसे शिक्षा विधि से लोकव्यापीकरण के लिए प्रस्तावित किया है | आज की स्थिति में शिक्षापूर्वक सच्चाइयों को बोध कराना सुलभ हो गया है | विहंगावलोकन से कहा जा सकता है कि सर्वाधिक देशों में शिक्षा उपक्रम का सम्भावना बन चुका है | अपवाद रूप में ही शिक्षा उपक्रम से वंचित गाँव अथवा नगर होगा | इसी आधार पर शिक्षा का मानवीयकरण मानवत्व के साथ होना पाया जाता है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत